शौर्यम्=पराक्रम; **तेजः**=शक्ति; **धृतिः**=धैर्य (दृढ़ता); **दाक्ष्यम्**=युक्तिपूर्णता (सूझ-बूझ); **युद्धे**=युद्ध में; **च**=तथा; **अपि**=भी; **अपलायनम्**=विमुख न होना; **दानम्**=दान; **ईश्वरभावः**=प्रजा-पालन; **च**=तथा; **क्षात्रम्**=क्षत्रिय के; **कर्म**=कर्म हैं; **स्वभावजम्**=स्वाभाविक।

अनुवाद

पराक्रम, तेज, धैर्य (दृढ़ता), सूझ-बूझ, युद्ध में भी पलायन न करने का स्वभाव, दान, प्रजा-पालन और नेतृत्व—ये सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं।।४३।।

कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम्।।४४।।

कृषि=खेती; **गोरक्ष्य**=गोरक्षा; **वाणिज्यम्**=व्यापार; **वैश्यकर्म**=वैश्य के कर्म हैं; **स्वभावजम्**=स्वाभाविक; **परिचर्यात्मकम्**=अन्य वर्गों की सेवा करना; **कर्म**=कर्म है; **शूद्रस्य**=शूद्र का; **अपि**=भी; **स्वभावजम्**=स्वाभाविक।

अनुवाद

कृषि, गोरक्षा और व्यापार वैश्य के स्वाभाविक कर्म हैं तथा दूसरों की सेवा करना शूद्रों का भी सहज कर्म है।।४४।।

स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु।।४५।।

स्वे स्वे=अपने-अपने; **कर्मणि**=कर्म में; **अभिरतः**=संलग्न; **संसिद्धिम्**=संसिद्धि को; **लभते**=पाता है; **नरः**=मनुष्य; **स्वकर्म**=अपने कर्म में; **निरतः**=संलग्न; **सिद्धिम्**=संसिद्धि को; **यथा**=जिस विधि से; **विन्दति**=प्राप्त होता है; **तत्**=वह; **शृणु**=सुन।

अनुवाद

अपने-अपने स्वाभाविक कर्म में लगा हुआ मनुष्य संसिद्धि को प्राप्त हो जाता है। अब इसके तत्त्व को मुझ से सुन।।४५।।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।४६।।

यतः=जिस परमेश्वर से; **प्रवृत्तिः**=जन्मादि होता है; **भूतानाम्**=जीवों का; **येन**=जिससे; **सर्वम् इदम्**=यह सब जगत्; **ततम्**=व्याप्त है; **स्वकर्मणा**=अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा; **तम्**=उस परमेश्वर को; **अभ्यर्च्य**=पूजकर; **सिद्धिम्**=संसिद्धि को; **विन्दति**=प्राप्त होता है; **मानवः**=मनुष्य।

अनुवाद

जिस परमेश्वर से सब प्राणियों का जन्म हुआ है और जिससे यह सम्पूर्ण जगत्